मेंथा से आय बढ़ायें

श्रीमन कुमार पटेल*, संजय कुमार, मनोज कुमार***, दिग्विजय दुबे****** और **श्यामवीर सिंह*******

भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी कही जाने वाली कृषि से वर्तमान समय में युवाओं का रुझान घटता जा रहा है। कृषि के आज भी परंपरागत होने के कारण आबादी का एक बड़ा भाग गाँव से शहर की तरफ पलायन कर रहा है। इसका मुख्य कारण है कि लागत के अनुपात में लाभ की प्राप्ति का न होना। मौजूदा समय में परंपरागत खेती को छोड़कर बाजार की मांग के अनुसार फसल उत्पादन करने का समय है। इस प्रकार नए कृषि उत्पादों का उत्पादन कर किसान अपनी खेती से अधिक से अधिक मुनाफा ले सकते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए मेंथा की खेती ऐसा ही एक बेहतरीन विकल्प है। इसकी खेती से किसान अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। मेंथा की एक यह भी विशेषता है कि जहाँ आवारा पशुओं जैसे नीलगाय, जंगली पशु आदि से फसल को नुकसान होता है, मेंथा में इसका भी भय नहीं रहता है। इसकी पत्ती में कड़वाहट होने के कारण कोई पशु इसे नहीं खाता है। मेंथा की एक हैक्टर खेती से लगभग अस्सी हजार से एक लाख रुपये तक का शुद्ध लाभ कमाया जा सकता है।

मेंथा *लेमिएसी* कुल का पौधा है, और इसका वैज्ञानिक नाम *मेंथा पाइपेराटा* है। भारत के विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है। हिन्दी में इसे पिपरमिंट, उर्दू में फिलफिल, गुजराती में पुदीनों, मलयालम मे कर्पूरमिंट तथा संस्कृत में सुंधि तपत्र के नाम से जाना जाता है। मेंथा की खेती हरी ताजी सुगंधित पत्तियों के लिए की जाती है। मेंथा का तेल व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण है। इसका उपयोग बड़े पैमाने पर दवाओं में किया जाता है। मेंथा के तेल में मेंथॉल पाया जाता है। इसके तेल का उपयोग ज्यादातर टूथपेस्ट, नहाने के साबुन, च्यूइगम, दर्द निरोधक दवा, मलहम तथा ब्यूटी प्रोड्क्टस में किया जाता है। भारत में मेंथा की खेती मुख्यत: भारत के उत्तरी मैदानी भागों में की जाती है, जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब आदि है। मेंथा के पौधे की पहली कटाई रोपाई के लगभग 90 दिनों बाद तथा दूसरी कटाई 120 दिनों बाद करके इसकी पत्तियों से पेराई करके तेल निकाला जाता है।

*सहायक अध्यापक, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, ****सहायक अध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल; **एसोसिएट प्रोफेसर, सस्य विज्ञान विभाग, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर; ***सहायक अध्यापक, कृषि विस्तार शिक्षा और संचार विभाग, *****सहायक अध्यापक, कीटविज्ञान विभाग, नव जीवन किसान पीजी कालेज मवाना, मेरठ

मेंथा की उन्नत प्रजातियां

मेंथा की उन्नत प्रजातियां निम्नलिखित हैं; कुशल, सक्षम, कोसी, हिमालयन, गोल्डन, सिम, उन्नति आदि। सिम और उन्नति, केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौध संस्थान लखनऊ द्वारा विकसित की गई प्रजातियां हैं। इनसे लगभग 140-160 लीटर तेल प्रति हैक्टर प्राप्त किया जा सकता है। मेंथा की प्रजातियों

उपयुक्त भूमि एवं जलवायु

मेंथा की खेती के लिए मृदा की सर्वाधिक भूमिका होती है। इसमें भरपूर मात्रा में जैविक पदार्थ मौजूद होने जरूरी हैं। मृदा का पी.एच.मान 6.5-7.5 के बीच हो, साथ ही साथ अच्छी जलधारण क्षमता एवं जल निकास का उत्तम प्रबंध हो। ऐसी मृदा मेंथा की खेती के लिए उत्तम मानी जाती है। मेंथा की फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए 22-32 डिग्री सेल्सियस तापमान और कटाई के समय कड़ी धूप होनी चाहिए।

को सीमैप लखनऊ से किसान प्राप्त कर सकते हैं।

रोपाई

80-90 किलोग्राम मेंथा की जड़ें एक हैक्टर के लिए पर्याप्त होती हैं। इनके छोटे-छोटे टुकड़े करके, जिसमें प्रत्येक में तीन से चार गांठें हों, मिट्टी की जुताई करके पाटा लगाकर ऊपर से मिट्टी या गोबर की खाद से ढक देना चाहिए। जब पौधे की लम्बाई 8-10 सेंटीमीटर की हो जाए तो उसे उखाड़कर तैयार किये हुए खेत में लगा देना चाहिए। रोपाई करते समय यह ध्यान रहे कि लाइन से लाइन की दूरी 30-40 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

यदि कम्पोस्ट खाद उपलब्ध हो तो 10 टन प्रति हैक्टर मेंथा रोपाई के 10-15 दिनों पहले खेत मे लगाकर जुताई कर देनी चाहिए। सामान्यत: उर्वरकों का प्रयोग मृदा जांच के आधार पर करना अच्छा रहता है। यदि मृदा जांच की सुविधा उपलब्ध न हो तो साधारणत: 140-160 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60-80 किलोग्राम फॉस्फोरस, 40 किलोग्राम पोटाश और 20-30 किलोग्राम सल्फर प्रति हैक्टर प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ 200 किलोग्राम जिप्सम प्रयोग करने से तेल की गुणवत्ता में वृद्धि हो जाती है। फॉस्फोरस, पोटाश, सल्फर तथा जिप्सम की पूरी मात्रा और नाइट्रोजन की आधी मात्रा प्रारम्भ में डालकर जुताई कर देनी चाहिए। शेष बचे नाइट्रोजन को रोपाई के 40 दिनों बाद तथा 60-70 दिनों बाद दो बार में दिया जाता।

पानी जमाव के कारण सूखते मेंथा के पौधे

सिंचाई और जल निकास

मेंथा के पौधे की रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। मेंथा सिंचाई भूमि के प्रकार, तापमान तथा हवा की तीव्रता पर निर्भर करती है। सामान्यत: जनवरी और फरवरी के महीने में 10-12 दिनों के अंतराल पर तथा मार्च से फसल की कटाई तक 7-8 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। सिंचाई के साथ ही साथ उचित जल-निकास का होना अत्यंत आवश्यक होता है। सिंचाई के बाद खेत में पानी का जमाव नहीं होना चाहिए और तुरंत बचे हुये पानी को निकाल देना चाहिए। खेत में जल-निकास अच्छा नहीं होने पर पौधा सूखने लगता है।

खरपतवार नियंत्रण

मेंथा के पौधे की रोपाई के 15-20 दिन बाद पहली गुड़ाई तथा 45 दिन बाद दूसरी गुड़ाई कर देनी चाहिए। यदि खरपतवार का नियंत्रण रासायनिक विधि से करना हो तो पेंडामेथेलिन 3.3 लीटर का 500-700 लीटर पानी में घोल तैयार कर रोपाई के 2-3 दिन बाद स्प्रे कर देना चाहिए।

कटाई - मेंथा की फसल की पहली कटाई फूल आने (90 दिन) पर करनी चाहिए। कटाई करने से एक सप्ताह पहले सिंचाई बंद कर देनी चाहिए। कटाई देर से करने पर पत्तियां सूखकर गिरने लगती हैं। कटाई धूप में करके रात भर छोड़ देनी चाहिए तथा जमीन से 4-5 सेंटीमीटर ऊपर ही कटाई करें ताकि दूसरी फसल ली जा सके। दूसरी कटाई पहली कटाई के लगभग 40-45 दिनों बाद की जाती है। यदि मेंथा की फसल देर से लगाई गई हो तो एक ही कटाई हो पाती है।

उपज - एक हैक्टर मेंथा से लगभग 40-50 टन फसल मिलती है। इससे लगभग 140-160 लीटर तेल प्राप्ति की जा सकती है। एक हैक्टर फसल से लगभग अस्सी हजार से एक लाख रुपये तक शुद्ध मुनाफा कमाया जा सकता है। अत: मेंथा की खेती परंपरागत खेती की अपेक्षा काफी लाभकारी साबित हुई है।

फसल सुरक्षा

दीमक - मेंथा की फसल में दीमक लगने से पौधे सूखने लगते हैं। इससे बचाव के लिए क्लोरपाइरीफॉस 2.5 लीटर प्रति हैक्टर प्रयोग करना चाहिए।

बालदार सूँडी - यह पत्तियों के नीचे पाई जाती है। यह पत्तियों के रस को चूसती है और तेल की मात्रा कम हो जाती है। इससे बचाव के लिए डाईक्लोरवास 500 एम. एल. को 700-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती लपेटक कीट - यह कीट पत्तियों को लपेटते हुये खाता है। इसके बचाव के लिए मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. 1000 एम.एल. को 700-800 लीटर पानी मे घोलकर स्प्रे करें।

पर्णदाग - फसल में इसका प्रकोप होने पर पत्तियों में गहरे भूरे रंग के दाग दिखाई देते हैं। पत्तियां पीली होने लगती हैं। इससे बचाव के लिए मैंकोजेब 75 डब्ल्यू पी 2 किलोग्राम प्रति हैक्टर का 800-1000 लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करें।

जड़ गलन रोग - मेंथा को जड़ गलन रोग से बचाने के लिए पौधों को रोपाई से पहले 0.1 प्रतिशत कार्बेन्डाजिम के घोल में 10-15 मिनट डुबोकर रोपाई करनी चाहिए।